स्त्रीवादी विचारों के प्रति समाज का दृष्टिकोण

- प्रा. डॉ. सुनिल साळुंके
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

बहुत बार सुन हुई एक कहाणी है - एक ब्यापारी अपने ऊँट और समान के साथ ब्यापार पर निकला। जहाँ भी वो जाते वहाँ अपने ऊँट को खुँट से बांधता। कुछ दिनों के बाद एक दिन ऊँट बांधते समय उसके देखा कि ऊँट की ¸ÃÃöß ™ट चूकी हैं। रात के समय, गाँव सें इतनी दूर दुसरी रस्सी का मिलना असंभव, ऐसे वक्त में उसने टुटß Æ‡ रस्सी को बांधने का बस अभिनय किया और अपने पंडाल मे चला गया। सुबह उठनेके बाद उसे ऊँट जगह पर नही होगा, ऐसे लगता हैं और वह ऊँट की दिशामें जाता हैं और ऊँट को जगह पर देख अचंभित हो जाता Æ…

भारतीय स्त्री की अवस्था ऐसी ही हैं। परंपराओं के धागे आप भी हमारे मन में हैं। खुले विचारों का खुलापन, या शक्ती का खुलेपनसे आविष्कार करने का मौका देकर भी परंपराके धागे मन में कहीं ना कहीं जीवित Æ… Ãö´öö•ö ´ö ÚÃ£öÝö स्त्रियोंकी परिस्थितीसे किसी भी समाज की सांस्कृतिक गहराई ध्यान में आती हैं। वैसे देखा जाय तो पता चलता हैं की वैदिक युग में स्त्रियोंका सामाजिक दर्जा उच्च था। क्योंकी वैदिक सुक्तियों में अनेक स्त्री देवताओं की प्रशंसा की है। पुरूषों के समान अनका जीवन भी स्वतंत्र बौध्दिक एवं अध्यात्मिक जीवन था। इस जीवन के आवश्यकता नुसार उनको शिक्षा भी मिलती थी। वेदोंका अध्ययन करने के साथ-साथ स्वतंत्र लेखन करने की भी अनुमती होती थी। लोपमुद्रा, ×¾öÀ¾ö¾öö¸ö ÝöÉöö 'ööÂा आदि ने लिखि ऋचाएँ ऋग्वेद में दिखाई देती हैं।

अपाला, विश्ववारा इन अत्रिकुल की स्त्रियों ने सुक्तों की रचना करने के प्रमाण हैं। गार्गी, मैत्रेयी, सुलभöö µöÆ विदूषी स्त्रियाँ अध्यापन भी करती थी।अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता उनको थी। धार्मिक कार्यों में भी स्त्रियों को पुरूषों के बराबर स्थान था। श्रुती स्मृती के समय पश्चात स्त्रियों के हालात में गिरावट आने लगी। उनकß Ã¾öÝö¡öÝöö, स्वतुत्र व्यक्तिमत्व नष्ट हो गया और वह रक्षणिय बनकर रह गई। धिरे-धिरे वेदपठन, य-याग करने के उनके अधिकारों को नकारा गया और धिरे-धिरे अकेली य-ा करनेवाली ब्रम्हवादिनी स्त्री यह उसका रूप नष्ट होकर वह केवल भोग की वस्तू के रूप में रह गई। दोषी बन गई। धिरे-धिरे उसका रूप हक की दासी बनना इतना ही रह गया। इसका परिणाम यह हुआ की स्त्री पराए आक्रमण की शिकार हो गई। स्त्रियोंकी उन्नती को पीछे खिचने में यह घटना महत्त्वपूर्ण हैं। शत्रू की स्त्री यह अपनी मिल्कीयत हैं इस सोच के कारण स्त्रियोंपर निरंतर अत्याचार होते रहें। (अर्थात आजभी उÃö´ö •öö¤ö परिवर्तन दिखता नहीं।) परिणामतः स्त्रियोंको घरमें बंदिनी बनाकर रखने की प्रवृत्ती बढ गई।इससे ही घरेलूपण, परदाप्रथा, विकसीत हो गई।संक्षेप में कहे तो आरंभिक काल में स्वतंत्र अस्तित्व वाली स्त्री बाद में दासी कैसे बन गई ? यहाँ तक की यात्रा हमारे सम-ö ´ö †öती हैं। इतना ही नहीं अगर हम इतिहास में -ाँककर देखे तो सम-ा में आता हैं की,

अनेक युद्ध भी स्त्रियोंके कारण होने के संकेत मिलते हैं। यहाँ से ही उसे एक हक की मिल्कियत और प्रतिष्ठा का रूप ¯ÖÖ¯Ö Æ†Ö। इन्सान के रूप में कहीं भी उसका विचार नहीं किया गया।

१८वी सदी में इंग्लंड में स्त्रियोंकें आंदोलन का प्रारंभ हुआ। भारतीय स्त्रियोंकें प्रश्न और इसकी पृष्ठभ्Ö×´Ö µÖÆ मात्र पाश्चात्यों से भिन्न थी। स्त्रियों ने स्वयं अपने प्रश्नों को उठाया नहीं वरन तत्कालीन उदारतावादी पुरूषों ने इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के प्रयास किये। सतीप्रथा, स्त्रीभ्रुण हत्या, विधवा विवाह बंदी, स्त्री मुंडन आदि अनेक प्रश्नों के उत्तर खोजने में राजाराम मोहनराय, ईश्वरचंद विद्यासागर, स्वामी दयानंद, ज्योतीबा फुले, आगरकर, महर्षि विठ्ठल ¸ÖÖ´Ö•Öß ØÎ¿Ö¤ê, राजर्षी शाहू महाराज इन सब का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। सती प्रथा जैसी घृणीत प्रथा को बंद करने में राजाराम मोहनराय ने अथक प्रयास किया। यहीं से सही अर्थों में स्त्रियोंमें जागृती आरंभ हो गई। बालविवाह प×¾Ö²Ö¬Ö, ×¾Ö¬Ö¾ÖÖ विवाह, इन बातोंको उस समय बहुत महत्व था। महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे, लोकहितवादी आदि ने इस बारे में महत्वपूर्ण कार्य किया। इन्होंने इन सुधारणाओं का प्रथम पुरस्कार किया।

बाद में स्त्री जागृती को तात्विक दृष्टिकोण से देखने में सबसे अग्रेसर रहे आगरकर… Ã¡Öß-पुरूष समानता, पुरूषों के समान स्त्रीको अधिकार मिले, जीवन में स्त्रीको सम्मान एवं शिक्षा मिले ,यह प्रयास आरंभ हुआ। इन विचारों में सुधार लाने का प्रयास जे.एस.मिल ने इंग्लंड में किया। स्त्रियों को चुनाव में हिस्सा लेने का अधिकार मिले इसलिए १८६७ से प्रयास किया गया किंतू प्रत्यक्ष रूपसें यह अधिकार प्रथम महायुद्ध के बाद मिला।

दुनिया के विभिन्न देशों के प्रश्न भी विभिन्न हैं। उन्हें अभिप्रेत सामाजिक एवं नैतिक मूल्य भी भिन्न हैं। उनकी जीवन शैली भी भिन्न हैं। इसलिए हर देश की स्त्रियोंकी समस्या भिन्न-×³Ö®Ö Æ… (^¤Ö.- ³ÖÖ¸ÖŸÖßµÖ ŸÖ£ÖÖ ¯ÖÖ¿“ÖÖŸµÖ Ã¡ÖßòÖÖ¤ß आंदोलन के ध्येय अलग-अलग दिखाई देते हैं। पुरूष के समान समाज में स्थान प्राप्त करना इनका उद्देश्य हैं, लेकिन पाश्चात्य स्त्री की सबसे बडी समस्या आर्थिक स्वतंत्रता की हैं। उसे केंद्र में रखकर पाश्चात्य स्त्रीवाद आगे ब&Öœ ¸ÆÖ Æ… भारतीय स्त्री धर्म, समाज, राजनीती, अर्थव्यवस्था, परिवार आदि सभी क्षेत्रों में जकडी दिखाई देती हैं। भारतीय स्त्रीवाद इन स्तरों पर संघर्ष कर रहा हैं।) उन समस्याओं का समाधान खोजना या उसपर स्वतंत्र विचार करना यह कार्य हो सकता हैं।किंतु इन सब बातों से यह निश्चित हो सकता हैं की, स्त्री का सामाजिक स्थान, उसके साथ मानवता का व्यवहार तथा नैतिक स्तर पर समानता का स्थान देना आवश्यक हैं। यह सब कुछ तभी संभव है जब विचÖ¸Ö ´Ö ¯Ö×¤¾ÖŸÖÖ रहेगी और उसी से स्त्री की और देखनेका समाजका दृष्टिकोण परिवर्तित होगा।

इ.स. १९६० के बाद इंग्लंड, फ्रान्स, अमेरिका इन देशोंमें स्त्रीवादी एहसास और आंदोलन का आरंभ हुआ। इसÖ जुडकर 'Ã¡Öß¾ÖÖ¤' µÖÆ ¿ाब्द आगे आया। एक मानव के रूप में अपना स्थान समाज में हो इस अहसास से 'Ã¡Öß¾ÖÖ¤' विकसीत हुआ। आरंभ में युरोप में वामपंथी विचारों से बाहर निकलकर राजकीय विचार रखनेवाली स्त्रियोंको 'Ã¡Öß¾ÖÖ¤'

यह नाम मिला और विचारों को रखनेवालों कों ‘Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤ß’ ऐसा कहा गया। आगे समयानुसार स्त्रियोंने अपना अधिकार, हक और कर्तव्य इसके लिए जो संघर्ष किया, उस संघर्ष के साथ इतिहास से ‘Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤’ यह संकल्पना जुड गई।

‘Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤’यह संकल्पना अस्मिता की लढाई के अहसास से उत्पन्न हुई हैं। हर सामाजिक स्तर पर स्त्रीको मानवता का मूल्ययुक्त अधिकार मिलें इसलिए जानबु–ा कर लडी जानेवाली यह राजकीय लडाई हैं। जातिभेद, धर्मभेद एवं वर्णभेद से परे जाकर स्त्रियोकें अधिकारों के लिए समता मुलक स्त्री-पुरूषों ने दी हुई आत्मभान की अस्मितापूर्ण »ÖœÖ‡ †£ÖÖŸÖ ‘Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤’Æî…

‘Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤’ ŒµÖÖ Æî :-

१९६० के बाद ‘Ã¡Öß’ को मानव के रूप में स्थापित किया जाए इस विचार ने जन्म लिया। अपने पारतंत्रिय जीवन सÖ Ã¡Öß-पुरूष समानता की लढाई स्त्रियोंको लढनी पडीं। इसीमें से ‘Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤’का जन्म हुआ। स्त्रीवादी विचार मानवता के हक से जागृत हुआ हैं। प्रकृति द्वारा मुलतः स्त्री-पुरूषों की शारीरिक रचना स्त्रीवादी विचारोंकों जिम्मेदार बनी। कारण स्त्री-पुरूष के रिश्तों में लैंगिक एवं जैविक भेद होता हैं। परिणामतः स्त्रियोंका लैंगिक शोषण स्त्रीवादने प्रस्तुत किया। स्त्री-पुरूष की निर्माण होनेवाली अलग-अलग मानसिकता, उसका उद्देश प्राप्त करने का प्रयास स्त्रीवादी विचारोंने किया।

‘स्त्रीवाद अर्थात पुरूषों से विभक्त होकर स्वयं अलग अपना संसार बनाना यह नहीं किंतु सांस्कृति के हजÖ¸Ö सालोके इतिहासने स्त्री का स्त्रीत्व नकारकर उसे जो पशुसमान अवस्था प्रदान की हैं उसमें से बाहर आकर अपने हक प्रस्थापित कर लेनेके लिए निर्माण किया हुआ मुंच याने स्त्रीवाद है।’

‘चुल्हा एवं बच्चे पैदा करना इससे परे स्त्रीत्व का अस्तित्वमूल्य प्रस्थापित करने के लिए स्त्रियोंकी संघर्षयात्रा का जन्म हुआ।’

‘अमेरिका, जपान और युरोपीय अनेक देशोंमें १९६२ के बाद आधुनिक काल में स्त्री प्रश्नोंको लेकर आंदोलन शुरू हुआ इस आंदोलन में प्रस्तुत किए गए विचारोंको ‘Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤’ कüÆÖ •ÖÖŸÖÖ Æî…’

लिंडागार्ड :‘स्त्रियोंका गौणस्थान और उसके लिए किए जानेवाले संघर्षका विश्लेषण यानी ‘Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤’Æî…’

विद्युत भागवत : ‘स्त्रीवाद यानी एकही एक सिधा सिद्धांत नही बलिक अनेक सिद्धांतोंका संम्मेलन हैं। वह केवल स्त्रियोंका गौणत्व नष्ट करनेके लिए आयी हुयी चेतना नही, किंतु उनके सही -सही अस्तित्व तक जानेका रास्ता आसान करनेवाली राजकीय जिम्मेदारी है। अर्थात अस्तित्व की पहचान कराना ही स्त्रीवाद की रणनीती है।’

अश्विनी धोंगडे : ‘कला, कानुन, रूढी, संस्था और जनमत इन सभी स्तरोंपर स्त्रियोंको मानवियता का मूल्य युक्त अधिकार प्राप्त होने के लिए जान बु–कर किया गया राजकीय संघर्ष ही स्त्रीवाद है।’

संक्षेप में पुरूष प्रधान संस्कृती द्वारा निर्मीत चक्रव्युह पार कर स्त्रियों द्वारा 'Ã¾Ö' अस्तित्व के लिए किया गया ÃÖ‘ÖÂÖ 'Ã¡Ö×¾ÖÖ¤' Æî Ã¡Ö-पुरूषोंने स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में सम्मानपूर्वक जीनेके लिए सभी सामाजिक समस्याओंका किया हुआ पुनर्विचार और पुनर्रचना ही 'Ã¡Ö×¾ÖÖ¤'है। यह अपना निजी जीवन जीते हुए आत्मसात किया जा सकता हैं... क्यों की स्त्रीवाद यह पुरूषों के विरूद्ध लडाई नही है। स्त्रियोंकों कही भी अपनी श्रेष्ठता सिद्ध नही करनी बल्कि इसमेसे Ã¡Ö-पुरूष समान स्तर पर लाने का प्रयास करना है। इसलिए स्त्रीवाद यह एक अहसास है। वह जीवनविषयक दर्शनशास्त्र है। उसी तरह वह एक संघटीत सामुहिक कृती के लिए दियी हुयी आवाज है, ऐसा हम कह सकìÖ Æî...

इससे नवसमाज के निर्माण के लिए सर्व स्तरीय मानवी व्यवहारमें स्थित शोषण के कारणों की खोज और Ã¡Ö अस्मिताका स्वीकार करने वाले नये विकल्पोंकी रचना करना साधारणः स्त्रीवादका स्वरुप दिखता हैं।

Ã¡Öीवाद का उद्‌भव :

अमेरिका :

स्त्रीवाद यह संकल्पना मुलतः पाश्चात्य विचारधारा है। इस का प्रथमतः उद्‌भव अमेरिका में हुआ। इ.स.१६७4 में मार्गारेट ब्रेटनने प्रथम मेरीलँड विधान भवन में स्त्रियोंको स्थान एवं चुनाव अधिकार देने की माँग की, किंतू उनकी इस माँग को अस्वीकार किया गया। यहीं सें संघर्ष का आरंभ हुआ। इ.स.१८८४ में इलि-ाबेथ कॅडी स्टॅन्टनन, मार्याराईट, मेरी ॲन मॅकलिन्टॉक आदि ने इस प्रश्न पर चर्चा करने के लिए खुला अधिवेशन रख्खा। सन १८४८ में न्युयार्क स्थित 'द फर्स्ट वुमन राईट्स कन्व्हेन्शन' में स्त्रियोंकी गुलामी के विरूद्ध क्रोध प्रकट करने की माँग की गई... ¸ÖÂ™ÒßµÖ ÃŸÖ¸¯Ö¸ अधिवेशनों के माध्यमसे कानुन परिवर्तीत करने की माँग की गई। १८६३ के पहलेसे स्त्रियोंने अपने स्व अस्तित्व को लेकर लढाई शुरू की थी। १८६९ में 'अमेरिकन वुमन सफ्रेज असोसिएशन' की स्थापना हुई। १८७९ में 'इब्सेनन' †¯Ö»µÖÖ '›Ö»ÃÖ हाऊस' इस नाटक में नोरा के रूपमें स्त्रीके अस्तित्वकी जरूरत को व्यक्त किया। १८९० स व्योमिंग, कोलोराडो, कुराह आदि राज्योंने स्त्रियोंको चुनाव का अधिकार देना प्रारंभ किया और१९१९ तक लगभग Ã³Ö ¸Ö•µÖÖने स्त्रियोंको चुनाव का अधिकार देना शुरू किया। इसी प्रकार ब्रिटन, फ्रान्स, कॉनडा व अन्य युरोपीय देशÖÖ´Ö ¤ÃÖ¸ विश्वयुध्द तक ऐसे आंदोलनो ने जोर पकडा । १९२० में सभी अमेरिकन प्रौढ स्त्रियोंकों चुनाव का तथा राजनिती में भागीदारी का हक मिल गया। १९२० तक अमेरिका में स्त्रीवादी आंदोलन काफी प्रगतीशिल रहा। किंतु उसके ²ÖÖ¤ स्त्रीवादी आंदोलन पतन की ओर अग्रेसर हुआ। १९६० के बाद स्त्रियोको अपने अस्तित्व का अहसास हुआ। शिक्षा एवं अन्य सुविधाओं के बावजूद भी हम पुरूषप्रधान संस्कृतिके हात की कठपुतली बनी हुई है इसका अहसÖÃÖ Æ†Ö... Ã¾ÖµÖ का स्वतंत्र व्यक्तित्व निर्माण करना यह धारणा उनमे निर्माण हुयी। अपनी पतनावस्था को पुरूषप्रधान समाज व्यवस्थाही जिम्मेदार है। यह सच्चाई उन्होंने स्वीकार की। तथा अपने हक के संबंध में प्रश्नोंके संबंध में उनके मन मे फिरसे एक बार विचार चक्र शुरू हुए और नई उम्मीद से अमेरिकन स्त्रियोंने अपने अस्तित्व के लिए, हक के लिए लडाई आरंभ की।

फ्रान्स :

जिस पद्धतीसे सरंजामशाही एवं उमरावशाही एन अन्यायी सत्ताओं का नाश हुआ उसी तरह ण्क दिन यकीनन प्ररूषप्रधान समाज व्यवस्थाका विनाश होगा यह आत्मविश्वास, आशावाद फ्रान्स की स्त्रियोंमे था । एसीसे स्त्रीवाद विकसीत हुआ और १८६८ से १८७१ इस समयावधी में फ्रेंच स्त्रियोंने 'माराया देराम्स' के नेतृत्वमें स्त्रियोंकाß ¾µÖ£ÖÖ†Ö काÖ उजागर करना आरंभ किया। इस आंदोलन से १८७२ में स्त्रियोंके हक सामने रखनेवाली आंतरराष्ट्रीय परिषद फ्रान्समे हुयी। इ.स. १८९२ मे 'फेमिनिस्ट कॉंग्रेस' भरवाई। १९१० में पहली बार स्त्रियोंके चुनाव हिस्सेदारी की बात सामने आयी। १९१९ में यह माँग स्वीकृत होकर भी १९२२ में फ्रान्सके द्वितीय सभागार ने उसके स्वीकृत किया। अंततः १९४५ में फ्रान्स की स्त्रियोंको मत डालने का अधिकार प्राप्त हुआ।

इंग्लंड :

इसी कालखंड में स्त्रीवादी आंदोलन इंग्लंडमे भी विकसीत हुआ। स्त्री-पुरूष का होना यह प्रकृतिका नियम है। किंतु उससें निर्मीत विषमता यह मात्र मानवनिर्मीत है। स्त्री - पुरूषोंमे स्थित लिंगभेद के कारण पुरूष स्त्री को अपने नियंत्रण मे रखता था। इसलिए 'केट मिलेट' ने अपनी 'सेक्सयुअल पॉलिटिक्स' इस किताब मे लैंगिकता की राजनिती प्रस्तुत की। नॉर्मन मेलर, हेन्री मिलर, डी.एच.लॉरेन्स इनके साहित्यने लिंगवाद दिखाया । मिलेट के मतानुसार हर क्षेत्र की लैंगिक विषमता नष्ट होना चाहिए।

मेरी एलमान अपने 'थिंकिंक अबाऊट वुईमेन' किताब में लिंगवादी दृष्टिकोण की चर्चा की। सन १९४९ में सिमॉन दि बोव्हा ने 'द सेकंड सेक्स' इस ग्रंथसे स्त्रीत्व की अलग पहचान स्पष्ट की। स्त्री जन्मतः स्त्री नही होती किंतु समग्र समाज व्यवस्था उसे स्त्री के रूप में निर्माण करती है।ऐसा विचार सिमॉन दि बोव्हा ने प्रस्तुत किया। इसके कारन जीवनशास्त्रीय दृष्टी से स्त्रियोंके अनुभव सृष्टी का आकलन नही होगा। संस्कृती द्वारा निर्मीत स्त्री प्रतिमा और पुरुषसत्ताक मूल्य दृष्टी की स्त्री जातीयता (फेमिनिन) ध्यान में लेकर ही स्त्रीयों की अनुभव सृष्टी का सा´ÖÖx•Öक परिणाम स्पष्ट करना आवश्यक है। यह नई दिशा सामने आयी ज्युलिया क्रिस्तव, मेरी फर्ग्युसनने बेटी क्रीडन, फायर स्टोन, मिचेल इन्होंने स्त्रियोंका चिकित्सक अध्ययन भिन्न-भिन्न पद्धतीसे समाज के सन्मुख रख्खा। इसका परिणाम यह हुआ की अमेरिका, फ्रान्स, इंग्लंड एवं अन्य युरोपीय देशोंमें स्त्री लेखिकाओंने, कार्यकर्ताओं ने, स्त्रियोंके अधिकारोंके लिए, स्त्रियोंको मुक्तरूप से जीवन जीने के लिए आंदोलन, हडताल, संघर्ष, साहित्य निर्मीती आदि की सहाय्यतासे खुब प्रयास किया। उनके इस प्रयास के कारण स्त्रियोंको शिक्षा का, मत डालने का, राजनीती मे हिस्सेदारी का आदि का प्राथमिक अधिकार मिल गया।

³ÖÖ¸üŸÖ :

³ÖÖ¸üŸÖßµÖ ÃÖमाजमें स्त्रिया माँ,पत्नी, गहिणी इन भुमिकाओं में पुर्णतः कैद थी। घर ही उनका कार्यक्षेत्र था। सामाजिक प्रवाह से वह पूर्णतः अनभि-न रही थी। १८१८ में अंग्रजों का आगमन हुआ और उन्होंने यहाँ की स्त्रियोंकी ¯Ö¸üÖ, होनेवाली यातना इसका कारण उनमें स्थित अ-ान, अशिक्षितता है यह जानकर स्त्रियोंकी शिक्षा को अधिक महत्व दिया। सतीप्रथा का विरोध किया इसी प्रकार महात्मा ज्योतिराव फुले तथा सावित्रीबाई फुलें ने पुना में लडकीयोंका पहला स्कुल स्थापित किया। यही से स्त्री को स्वयं के दुःख का एहसास हुआ और वह अपने दुःख को साहित्य के माध्यम से प्रकट करने लगी। सन १८८२ में ताराबाई शिंदे ने स्त्री -पुरूष तुलना इस निबंध में पुरूषोंका वर्चस्व, अत्याचार, स्त्री-पुरूष में स्थित विषमता प्रकट की। विभावरी शिरूरकर ने १९३३ में अपने कहानी संग्रह में कुआरीओंके अंतरंग, उनपर आनेवाली विपदाओं को प्रकट किया। आगरकर ने अपने साहित्य मे से बालविवाह, जरठ कुआँरी विवाह, विधवा विवाह, तलाक, बहुपत्नीत्व ऐसी समाज मे स्थित स्त्रियोंके विषय में अनिष्ठ रूढीयों के विषय में क्षोभ व्यक्त कर स्त्रियोंमें चेतना जगाने का प्रयास किया।

गांधीजी के योगदानसे राष्ट्रवादी आंदोलन में स्त्रियों ने बडे पैमाने पर हिस्सेदारी की। इसीसे सन 1824 ´Ö अखिल भारतीय महिला परिषद की स्थापना हुयी। इस संघटन ने स्त्रियों को बराबरी का हक मिले इस की माँग की। १९२९ का सारडा कानुन, १९३१ का मुस्लीम विवाह कानुन इन के गठन में इन संघटनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संक्षेप मे १९३० के बाद इस परिषद ने स्त्री-पुरूष समानता स्वीकार की। सन १९५४-55 ‡ÃÖ ÃÖ´ÖµÖÖ¾Ö¬Öß ´Ö ØÆü¤ü ×¾Ö¾ÖÖÆü कानून, हिंदू पैतृक कानुन, पंजीकृत विवाह कानून ऐसे स्त्रियोंके दृष्टीसे महत्वपूर्ण कानुन बनाए गए। राष्ट्र स्वतंत्रा के बाद स्त्रियोंको चुनाव अधिकार, शिक्षा का, राजनीती में हिस्सेदारी का हक मिल गया। अर्थात भारत में १९६० तक स्त्रीवादी आंदोलन ने भलेही तीव्रता हासील नहीं की थी, फिर भी १९६० के बाद स्त्री अपने अस्तित्व को लेकर फिर से सोचने लगी। अपने हक के लिए इनके मन में क्रांती की भावना निर्माण हुयी।

भारत मे स्त्रीवाद के बीज वैदिक काल से वारकरी संप्रदाय तक दिखाई देते है। फिर भी सही अर्थो में स्त्रीवाद का †Ö¸ü³Ö 1975 ÃÖ ¿Öºþ Æü†Ö… 1975 µÖÆü ¾ÖÂÖÔ †ÓŸÖ¸üÖ¸üÂ™Òüीय महिला वर्ष के रूप में मनाया गया तब से भारत में स्त्रीवादी आंदोलन को चेतना मिल गयी।

१९७५ के बाद धिरे -धिरे बडे शहरों में गाँवमें अत्यंत उग्र भूमिकावाले, संख्या की दृष्टीसे छोटे गटों ने भी Ã¡ाीवाद को लेकर काम करना आरंभ किया। उदा. देश सेविका संघ, महिला मंडळ, सेवा सदन, महिला सेवÖÖ ÃÖ´ÖÖ•Ö, भगिनी समाज ऐसी अनेक स्त्री संघटनाएँ स्त्रियों के हक एवं उन्नतीके लिए लढ रही थी।

1970 ´Ö ³ÖÖ¸üŸा में स्त्रियोंपर होनेवाले अन्याय अत्याचार के विरूद्ध स्त्री संघटनाओने आवाज उठाई। उसका परिणाम यह हुआ की स्त्रियों पर होनेवाले अन्याय को लेकर १९८० में कानुन पारित किया गया। पश्चिम बंगाल के

Ÿö³ÖÖगा आंदोलन में, आंध्रप्रदेश के तेलंगना आंदोलन, महाराष्ट्र के नर्मदा आंदोलन, आदिवासीयों के हक के लिए धुलिया जिले में स्त्रियोंने आक्रमक भुमिका अपनाकर आंदोलन किया।चिपको आंदोलन में सन १९७२ में वनों के साथ अशिक आत्मियता के संबंध रखनेवाली स्त्रियों ने आंदोलन द्वारा वनोंका बाजारूकरण रोक दिया।

१९७० में मधुरा इस आदिवासी बालिका पर पोलिस थानेमें बलात्कार किया गया। उसके विरूद्ध स्त्रß संघटनाओने क्रांतिकारी क्रोध व्यक्त कर अन्याय के विरूद्ध लढकर सरकार को इस संबंध में १९८३ में बलात्कार विषयक कानुन करने के लिए प्रवृत्त किया। साथ ही मंजुश्री सारडा के मृत्यू के कारण इस समय बढ ¸ÆüÊ ¤üÆê•Ö ¯ÖÏ£ÖÖ >ßÿÖ प्रकरणों के कारण इस प्रश्न को उठाकर सरकार को १९८४ -८६ इस काल में दहेज प्रथा विरूद्ध कानुन करने के लिए बाध्य किया गया।

इ.स. १९७५ में वंशिक दोष ढुँढने के लिए गर्भजल परीक्षण तकनिक भारत में आयी । किंतु उसका बडे पैमाने पर बाजारूकरण हुआ। इसलिए १९८६ में 'फोरम अगेन्स्ट सेक्स डिटरमिनेशन ॲण्ड प्रिसिलेक्शन' इस मुंबई की संघटन ने बडी मात्रा में समाज में चेतना जगाकर सरकारको इस संबंधमें कानुन बनाने के लिए प्रवृत्त किया। इसके परिणाम स्वरूप १९८८ में सरकारने गर्भजल परिक्षण कानुन के अनुसार पाबंदी लगाई।

इस प्रकार भारतमें स्त्रीवाद को लेकर १९७५ से अधिक तीव्रता धारण की। स्त्रीवाद का इस समय में सभी ओर प्रसार एवं प्रचार होकर स्त्रियोंने नई चेतना, आत्मविश्वास निर्माण होकर यभी स्त्रियोंने अपने हक कß »ÖœÖ‡ »ÖœßÖ ‡ÃÖ´Ö से राष्ट्र स्वतंत्रता के अपरांत संविधानने चुनाव, शिक्षा, राजनिती मे सक्रियता यह प्राथमिक अधिकार प्राप्त हुए।

Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤ü- ×¾Ö×¾Ö¬Ö ÃÖ¯Ö¤üÖµÖ :

स्त्रीवाद यह एक सीमीत विचार प्रक्रिया नही बल्कि स्त्रीमुक्ती के संबंध में खुली सोच का संचयन, ऐसा ‡ÃÖ ¾ÖÖ¤ü क¾Ö स्वरूप है। इसलिए स्त्रीवादमें उदारतावादी, मार्क्सवादी, प्रकृतिवादी, कालास्त्रीवाद, पर्यावरणीय, समाजवादी ,उग विचारधारा, मनोविश्लेषण आदि विविध संप्रदाय दिखाई देते है। इसीमे से स्त्रीवादी चिारधारा को चंतना मिल गई और स्त्रीवाद अधिक सबल होने में सहाय्यता मिली। समाज में राजनैतिक, आर्थिक लैंगिक परिस्थिती में वास्तविक अनुभूती के कारण स्त्रीवादी विचारोंको तीव्रता प्राप्त हुई। इसमे से स्त्रीवादी विचारोंकी भिन्न प्रवत्तियाँ निर्माण हुई।

1) ˆ¤üÖ¸üŸÖÖ¾ÖÖ¤üß Ã¡ÖßÖ¾ÖÖ¤ü :

१८ वी सदी के अंत में तथा १९ वी सदी के आरंभ में उदारतावादी स्त्रीवाद विकसीत हुआ। इस विचार प्रवाहने मानवी हक तथा स्त्रीयोंको समान अधिकार यह बाते सामने लाई। स्त्रियोंकों विभिन्न क्षेत्रोंमें समान सुअवसर मिलने से वह विवेकनिष्ठ बनेंगी ऐसा आशावाद इन्होने रखा। स्त्रियोंने घरसे बाहर निकलकर नये-नये कार्य कर आत्मिक समाधान ¯Öाप्त करना उदारतावादीयोंको महत्वपूर्ण लगता था। जैसे-जैसे समय बदलता गया वैसे-वैसे आधुनिकता का प्रभाव

उदारतावादी विचारधारा पर पडा और इसीसे आधुनिक उदारतावादी विचारधारा का उद्भव हु†Ö… ‡ÃÖ ×¾Ö“ÖÖ¸¡ÖÖ¸¾ÖÖÆ ¯Ö¸¡ पाश्चात्य संस्कृतिका अधिाक प्रभाव रहनेसे इस प्रवाह ने बौद्धिकता को शारीरिकतासे अधिक प्राथमिकताÖ दी ।उदारतावादीयों ने राज्यसंस्था, कुटुंबसंस्था और स्त्रियाँ इनके परस्पर संबंधोंको वृद्धिंगत किया।

2) ´ÖÖŒÃÖÔ¾ÖÖ¤üß Ã¡Öß¾ÖÖ¤ü :

श्रम के बाजारमें कामकाजी महिलाओंका भविष्य क्या है, यह विचार मार्क्सवादी स्त्रीवादने केंद्रस्थान मानÖ लिया। उस विषमतामुलक वर्गव्यवस्थाने स्त्रियोंका गौणत्व क्यों और कैसे आया इसका मुल खोजने का प्रयास मार्क्सवादी स्त्रीवादने किया है। पुरूषपधान व्यवस्थामें स्त्रियाँ पुरूष के गुलामी में जकडी है। यह सत्यता इस विचारधाराने उजागर की । फ्रेडरिक एंगल्सके लेखनसे मार्क्सवादी स्त्रीवाद के विकासको गती प्रदान की। घरकाम का सामाजिकरण होना आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण विचार मार्क्सवादी विचार प्रवाह रखता है। यदी श्रमिक बाजार में स्त्रियोंको अधिक सक्रिय संम्मिलीत किया गया तो ही स्त्रीमुक्ती हो सकती है, ऐसी सोच इस विचारधाराने रखी। घरेलु काम के लिए राज्यसंस्थाने मूल्य चुकाना चाहिए यह नया विचार मार्क्सवादी विचार प्रवाहने उजागर किया। घरमें विनाम»µÖ †×ŸÖ×¸ŒŸÖ काम करना इसका परिणाम स्त्रियोंकी क्रियाशिलता का अधपतन होना है, इस महत्वपूर्ण परिणाम को माŒÃÖÔ¾ÖÖ¤üß ×¾Ö“ÖÖ¸¡ प्रवाह ध्यान में लेता है। लिंगाधिष्ठीत श्रम का विभाजन मार्क्सवादी विचारधारा को स्वीकार नहीं।

3) ÃÖ´ÖÖ•Ö¾ÖÖ¤üß Ã¡Öß¾ÖÖ¤ü :

स्त्रियोंका शोषण लिंगभाव से और वर्गव्यवस्था से होता है ऐसा विचार समाजवादी विचारधारा का हैं। µÖÆ विचारधारा लिंगभाव और वर्ग को स्त्रियोंका शोषण करनेवाली यंत्रणा कहता है। समाजवादी स्त्रीवादी विचारधाराने वंशसातत्यता एवं लैंगिककता को अत्यंत महत्व दिया। समाजवादी स्त्रीवादी विचारधाराने स्त्रियों के होनेवाले शोषण के Ã¾Öºþ¯Ö ×³Ö®Ö-×³Ö®Ö ¯Ö¨üŸÖßÃÖê Ãपष्ट किए। ज्युलियट मिचल यह समाजवादी स्त्रीवादी विचारधाराकी एक महत्वपूर्ण चिंतक है। वे कहती है, वर्गव्यवस्था खत्म करने के लिए सामाजिक क्रांती की आवश्यकता है।इसका अर्थ यह हुआ कÖß वर्गव्यवस्था, पुरूषप्रथा खत्म होने के लिए सामाजिक, मानसिक एवं सांस्कृतिक क्रांती की आवश्यकता है।

४) उग्रमतवादी स्त्रीवाद :

राजकिय विचारोंकी कोई भी एक बंधनता इस विचारधाराने स्वीकार नहीं की। समाज के सभी स्तरों पर स्त्री का शोषण सबसे अधिक हुआ है ऐसा इस विचारधारा का मत है, और वह योग्य भी है। परंपरा ने स्त्री के हिस्से में केवल बलिदान दिया है। इसलिए इस चारदिवारी शोषण को उग्रमतवादी स्त्रीवादने मात दे दी। इस विचारधाराने स्त्री के बारे में अनेक महत्वपूर्ण बातोंका विचार किया । पुनरोत्पादन, मातृत्व एवं लैंगिकता की राजनीती यह उग्रमत¾ÖÖ¤üß Ã¡Öß¾ÖÖ¤üß विचारधाराने विश्लेषित कर दिखाया है। समाज का इतिहास यह वर्गसंघर्ष का इतिहास नहीं बल्कि वह लिंगभाव के संघर्ष का इतिहास है। ऐसे इस विचारधारा का मत है। अर्थात पुरूषोंने पुरूषत्व और स्त्रीने अपने स्त्रीत्व के परंपराके

चौखट से बाहर निकलना आवश्यक है ऐसा लगता है। वंशीक रुप में उनका कार्य स्त्रियोंकी मुक्ति का मार्ग बन सकता है। ऐसी आशा इस विचारधाराने व्यक्त की। '•ÖÖ-जो निजी वह -वह राजकीय' यह संकल्पना एस प्रवाहने स्पष्ट की। किंतु साथ ही लिंगाभाव व्यवस्थाके प्रति सैद्धांतिक स्तरपर उग्रमतवादी स्त्रीवादी विचारधाराने अपना विवचिन किया ।

५) मनोविश्लेषणवादी स्त्रीवादः

सिंग्मंड फ्राईड की लैंगिकता पर आधारीत सिद्धांतके कारण मानव अंदर बाहर से हिल गया। उन्होंने मानव की लैंगिकताके महत्वपूर्ण तीन सोपान स्पष्ट किए - १) विक्षिप्तता (Aberrations), २) भिन्नता (Variation), ३) विकृती (Perversion) आदि। इन सोपानों के कारण स्त्रियों का दमन और होनेवाला शोषण उजागर किया। स्त्री-¯Öºþ̂Ö के जीवन का लेखाजोखा फ्राईडने लिया है। किंतु कुछ मनोविश्लेषणात्मक स्त्रीवादीयोंने फ्राईड सेभी अलग मुद्दों को रखा। इन में ॲडलर, हार्नी, थॉम्पसन आदि नाम गिनाए जा सकते है। उन्होंने स्त्री- पुरूष की मानसिकता का अध्ययन किया। इस मनोविश्लेषणात्मक स्त्रीवादी विचारधाराने एक महत्वपूर्ण कार्य किया। मानवी विकास का एकात्मिक सिद्धांत स्थापित किया और मानवी विकास का आधुनिक इतिहास निर्माण होने मे सहाय्यता मिली। मानवी जीवन में विकास यह प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है। हर स्त्री-पुरूष निर्मीतीक्षम रहता है । इस निर्मीतीक्षमता का उपयोग विकास प्रणालीसे ही हमें दिखाई देता है।

६) काली स्त्रीवाद :

इस स्त्रीवादी विचारधाराने हर स्तर की स्त्री जागृत होने में मदत हुई। जागृत स्त्री का प्रतिबिंब काली Ã¡ÖßÃ¾ÖÖ¤ß विचारधारा में दिखता है। क्यों की काली स्त्रियोंने आरोप किया की स्त्रीवादी आंदोलन विकसीत किया हुआ पद्धतीशास्त्र गौरवर्णी, भिन्नलिंगी और मध्यमवर्गीय स्त्रियोंके अनुभवों पर आधारित है। अमेरिका में काले पुरूषोंसे काली स्त्रियोंने अपनी विशिष्ट अलगता बनाए रखी। १९७३ में अमेरिका में काली स्त्रीवादी संघटना की स्थापना हुई। जिससे स्त्रियोंको लेकर संवेदना एवं जागृती होने लगी। काली स्त्रियाँ समाज में सबसे निचले स्तर पर थी। साम्राज्यवादी व्यवस्थाने इन काली स्त्रियों को बीना स्त्रीत्व की स्त्रियाँ माना था। किंतु स्त्रीत्वकी अस्मीतासे काला स्त्रीवाद प्रकाशीत हुआ। काला स्त्रीवादी आंदोलन यह गौरवर्णीय स्त्रीवादी आंदोलन से श्रेष्ठ है। यह श्रेष्ठता की भावना निर्माण होना मतलब एक सत्वीकरण है। और इसी भेद के कारण स्त्रीवाद के अंतर्गत अस्मिताकी राजनिती शुरू हुई। वास्तव में का»Öß Ã¡ÖßÃ¾ÖÖ¤ß आंदोलन एवं गौरवर्णी स्त्रीवादी आंदोलन इसका भेद भुलकर पूर्णतः समन्वयवादी भूमिका का स्वीकार करना महत्वपूर्ण Æî †Öî¸ü Ã¡Öß- पुरुष इस रिश्ते का समानीकरण एवं एक संलग्नीता होना आवश्यक है।

७) पर्यावरणीय स्त्रीवाद :

वनस्पती तथां प्रकृती में होनेवाला सुफलीकरण, प्रजनन, पोषण, संवर्धन और जैविक वृद्धीकी प्रक्रिया की प्राकृतिकताके साथ स्त्री शरीर का सम्यक नाता है ऐसा माननेवाली या विचारधारा है। स्त्री धर्म की इस प्राकृतिकताका

ध्यान रखकर उन्नतीमे आनेवाली बाधाओं को दूर करना इसके लिए आवश्यक है। सामाजिक वातावरण निर्माण करना इस पर जोर देनेवाला यह आंदोलन है। गर्भपात, गर्भजल परिक्षण आदि अप्राकृतिक कृत्योंके विरूद्ध इस आंदोलनने जनजागृती की। पुरूषप्रधान संस्कृती में स्त्रीदेह अपवित्रताका विषय माना गया। मासिक धर्म, प्रसुती इन जैविक स्थितियों को नैतिक अर्थ प्राप्त हुआ और स्त्री का शरीर ही उसक भाग्य बन गया। परिणामतः व्यक्तिविकास के लिए समानता का हक नकारा गया । शोषण और पारतंत्रताका मुल स्त्री शरीर को प्राप्त नैतिक परिणामों मे हैं। पर्यावरवादी स्त्रीवादने स्त्री शरीरको मिलनेवाली गौणता का प्रतिवाद किया है। सृष्टीके प्राकृतिक चक्र के साथ स्त्री शरीर के बदलाव की स्थितीका प्राकृतिक संबंध है। इसपर उन्होंने जोर दिया है। तथा स्त्री शरीरकी और न नैतिक दृष्टी से देखनेकी दृष्टी प्रदान की। हम लोग अखबार कहानी, टिवी सिरियल मे देखते है की स्त्री का होनेवाला शोषण हमे दिखाई देता है।

ÃÖÖ¸üÖ¿Ö :

स्त्रीवाद के बारे मे समाज मे बहुत सारी गलत फहमियाँ दिखाई देती है।

* स्त्रीवाद पुरुषों के विरूद्ध है। लेकिन सच तो यह है की यह पुरूष प्रधान व्यवस्था के विरूद्ध दोन्होंने (स्त्री-पुरूष) मिलकर किया गया संघर्ष है।

* स्त्रीवाद विचारोंसे प्रभावीत होना या उस विचारधारा का स्वीकार करना शरमकी बात नहीं है। लेकिन फिर ³ÖÖß ÆüÖ´Ö »ÖÖêक अपने आपको स्त्रीवादी बताते नही। अगर हम सही ढंगसे सोचे तो हम स्त्रीवादी भुमिका वाले है यह कहने मे हमे हिचकिच बिलकुल भी नहीं मेहसूस होगी।

* स्त्रीवाद ये लढाई नही है। पुरूषोंकी सत्ता को हासिल करना स्त्रीवादोंका उद्देश नहीं है। बल्कि समानता के आधार पर यह चलना चाहिए, कोई भी श्रेष्ठ नहीं और कोई भी कनिष्ठ नहीं। संसार का यह रथ है बायसिकल नही केवल इतना बताना है।

* Ã¡ÖÖß¾ÖÖ¤ीयोंको पुरूष नहीं बनना है। उन्हे अपने स्त्रीत्वका एहसास है उनका बस इतनाही कहना है की, हमे समानता मिलकर, समाज मे बराबरी का हक मिले।

* स्त्रीवाद का उद्देश खुदका अलग विश्व बनाना नही है। बल्कि समाज में उनके कार्य को, उनके विचारों को, उनको प्रतिष्ठा मिले, लोग उनके काम को सम–ने इतनी ही है।

* स्त्रीवाद यह केवल आंदोलन, लेखन ,बाते या कुछ NGO, स्त्रियों तक ही सीमीत नही है। वो बस स्त्रीवा¤ इस संकल्पना, शब्द, विशेषण तक ही सीमीत नही है। छोटे से छोटे स्तर तक उसका विस्तार है। स्त्रीवाद ¤ê¿Ö, काल,जाती,धर्म, वर्ग इससे परे जाकर सोचता है। क्योकी हर जगह स्त्री के भावनीक,मानसिक,नैतिक, आर्थिक, भाषिक एवं अस्मिता के संदर्भ में जो भी सवाल है वो एक जैसे है।

* स्त्रीवादी विचार याने पाश्चात्योंका अनुकरण नही है। भारत मे समाज सुधारकोंने उसके बारे में उद¸Ÿöû¾ûö¤ß दृष्टीसे जो कार्य किया है उसे हमने नजर अंदाज किया है बस इतना है।

* स्त्रीवाद याने घरसंसार को छोडकर स्वतंत्र याने स्वैराचारसे रहने वाली, अपने घरमें निराश होकर घर को छोडकर स्वतंत्र रहकर स्त्रीवाद का स्वीकार करनेवाली स्त्रीयाँ ऐसे बोलना याने समाज के बारे में गलत धारनाओंका निर्माण करना है। इसका मतलब हम नयी सोचको सम–ा नही पा रहें है, या जानबु–ाकर सम–ाना नही चाह रहे है।

* Ã¡ûö¾ûö¤ Æ¸ Ãत्री का इंन्सान के रूप मे स्वीकार करना, सोचना है। यह केवल स्त्रीयोंका सवाल नही है बल्कि वह पुरूषों की मानसिकता को बदलने का प्रयास है।

हम सब को उसके प्रती सकारात्मक सोच ही नही बल्कि उसे सकारात्मक रूप से स्वीकार करना हमारा कर्तव्य Æ…

*****